दयाल फर्टिलाइज़र्स ग्रुप का त्रैमासिक मुख-पत्र

दयाल कृषि बुलेटिन

अंक : 04 / 2011-12 / 2 माह : नवम्बर-दिसम्बर 2011 से जनवरी 2012 For Private Circulation only

गेहूँ की तकनीकी खेती – एक मुनाफे का सौदा

गेहूँ जैसी खाद्यान्न वाली फसलें अब केवल पेट भरने का साधन मात्र नहीं रह गई हैं, बढ़ती माँग के कारण आज गेहूँ इत्यादि जैसी खाद्यान्न वाली फसलों का मूल्य भी काफी अच्छा मिल रहा है अतः किसान भाई गेहूँ में भी नकदी फसल की भाँति योजना बनाकर, वैज्ञानिक ढंग से खेती करके अधिक उपज लेकर अधिक से अधिक लाभ ले सकते हैं। भूमि से लगातार फसलों का उत्पादन लेकर पोषक तत्वों व कार्बन के लगातार अन्धाधुंध दोहन के परिणामस्वरूप भूमि की उर्वरा शक्ति के नष्ट होने से भूमि व फसल की उत्पादकता या तो स्थिर हो गई है या गिर रही है। परन्तु समन्वित पोषक तत्वों (कार्बनिक खाद + लाभकारी जीवाणु + रासायनिक खाद) के प्रयोग से फसल के साथ भूमि की उर्वरा शक्ति में भी वृद्धि सम्भव है। स्थानीय क्षेत्रों के लिए संस्तुत गेहूँ की उन्नत किस्मों के प्रमाणित बीज का चयन करें।

कन्डुआ रोग से ग्रसित गेहूँ

बीज उपचार : 40 किग्रा0 बीज को प्राकृतिक स्टीकर (200 ग्राम गुड़ + 1 ली0 पानी का घोल) से लेपित करने के पश्चात् 200 ग्राम **अनमोल डर्मा** या 50 मिली0 **फंजीक्योर** + 200 ग्राम **अनमोल सूडो** या 50 मिली0 **सूडो केयर** द्वारा बीज को उपचारित करें।

भूमि उपचार : **अनमोल खाद नीम प्लस** 120–160 किग्रा0 + **वसुधा बायो–बूस्टर (N)** 1 किग्रा0 + **बायो–फॉस (P)** 1 किग्रा0 + **बायो–पोटाश (K)** 1 किग्रा0 + **अनमोल डर्मा** 1 किग्रा0 को भली–भाँति मिश्रित करके कम से कम 8 घण्टे छायादार स्थान पर रखने के पश्चात् एक एकड़ खेत में अन्तिम जुताई के पूर्व बुरकाव करें।

बुवाई के समय उर्वरक : डाई (डी0ए0पी0) 25 किग्रा0 + **डी0ओ0पी0** 20 किग्रा0 + पोटाश 25 किग्रा0 या **सुपर एक्शन पोटाश** 4–8 किग्रा0 + **दयाल सल्फोरिच–90 G (90% S)** 8 किग्रा0 व **अनमोल माइक्रो** 5 किग्रा0 प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें।

खरपतवार नियन्त्रण : बुवाई के अधिकतम 35 दिन के अन्दर यदि पाटा लगे खेत में **सल्फो सल्फ्यूरान** नामक खरपतवारनाशी का छिड़काव कर दिया जाए तो फसल खरपतवार मुक्त रहती है।

सिंचाई : गेहूँ की फसल में सिंचाई का विशेष महत्व है। प्रथम सिंचाई ताजमूल अवस्था पर (20–21 दिन), दूसरी कल्ले बनते समय (40–45 दिन), तीसरी तने में गाँठ बनते समय (60–65 दिन), चौथी पुष्पावस्था में (80–85 दिन) व पाँचवी सिंचाई दुग्धावस्था (100–105 दिन) पर अवश्य करनी चाहिए।

प्रथम टॉप ड्रेसिंग : बुवाई के 25 दिन बाद यूरिया 25 किग्रा0 + **दयाल मोनो ज़िंक** 2.5 किग्रा0 + **कैल्शिबोर 3** किग्रा0 + **दयाल फैरस सल्फेट** 5 किग्रा0 + **अनमोल/सुपर एक्शन अमृत–जी** 10 किग्रा0 या **अनमोल जाइम** 8–10 किग्रा0 को मिश्रित करके एक एकड़ में खड़ी फसल पर प्रयोग करें।

द्वितीय टॉप ड्रेसिंग : बुवाई के 35 दिन बाद यूरिया 25 किग्रा0 + **सल्फोवेट DF WDG** 1 किग्रा0 + **गेहूँ–धान स्पेशल** 1 किग्रा0 + **सुपर एक्शन मोनो ज़िंक** 300 ग्राम को मिश्रित करके प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें।

प्रथम पर्णीय छिड़काव : **अनमोल N P K (19:19:19)** की 1 किग्रा0 + **ह्यूमिक फर्ट** की 250 ग्राम मात्रा को बुवाई के 50 दिन बाद खड़ी फसल पर 150 ली0 पानी में घोलकर स्प्रे करें।

द्वितीय पर्णीय छिड़काव : बाली निकलते समय **सुपर एक्शन अमृत द्रव** 250 मिली0 + **अनमोल माइक्रो** 500 मिली0 + **दयाल बोरोफर्ट (20% बोरॉन)** 250 ग्राम को 150 ली0 पानी में घोलकर एक एकड़ खेत की खड़ी फसल पर छिड़काव करें।

तृतीय पर्णीय छिड़काव : बाली में चमकदार व बड़े दाने के लिए, बाली बनने के बाद **अनमोल N P K (0:0:50)** 50% पोटाश वाले इस उत्पाद की 1 किग्रा0 मात्रा को खड़ी फसल पर 150 ली0 पानी में घोलकर स्प्रे करें।

लाभ : विभिन्न प्रयोग परीक्षणों में पाया गया है कि दयाल उत्पादों के प्रयोग से–

1. गेहूँ की उपज में 300 किग्रा0 प्रति एकड़ तक वृद्धि पायी जाती है। 2. गेहूँ का दाना मोटा, सुडौल व चमकदार हो जाता है। 3. पौधे स्वस्थ बने रहते हैं तथा बीमारी, कीट–पतंगों व पाले सूखे का मुकाबला अच्छी प्रकार से कर पाते हैं।

दीपावली एवं नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ

संतुलित आहार – दयाल पशु आहार

पशुओं का समय से ग्याभिन न होना, दुग्ध उत्पादन अवधि का अत्यन्त कम होना एवं कम दुग्ध उत्पादन आदि पशुपालकों की प्रमुख समस्यायें हैं। इसका कारण पशुओं को सन्तुलित मात्रा में आहार उपलब्ध न कराया जाना है। यदि पशुओं को उनकी दुग्ध उत्पादन क्षमता के अनुसार दयाल सन्तुलित पशु आहार खिलाया जाए तो पशुपालक उपरोक्त सभी समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं।

दयाल सन्तुलित पशु आहार में पशुओं के लिए आवश्यक विभिन्न पोषक तत्व जैसे– कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, खनिज लवण एवं विटामिन उचित मात्रा एवं अनुपात में उपलब्ध हैं जिसे कुशल वैज्ञानिकों की देखरेख में तैयार कराया जाता है। इसमें मूँगफली खल, सरसों खल, बिनौला खल, सोयाबीन, गेहूँ, अरहर, मक्का, चावल पॉलिश, शीरा, आयुर्वेदिक दवाएं, बाईपास प्रोटीन, नमक, एन्ज़ाइम, विटामिन एवं खनिज लवण आदि को संतुलित अनुपात में मिलाया गया है।

आहार खिलाने का तरीका : दयाल पशु आहार को दिन में दो बार सूखा अथवा एक घंटे पानी में भिगोकर भूसा के साथ सानी बनाकर खिलायें। दयाल पशु आहार प्रारम्भ में एक चौथाई मात्रा में खिलायें और धीरे–धीरे एक सप्ताह बाद पूरी मात्रा में खिलायें।

– **डॉ0 दिनेश पाण्डेय** पशु आहार प्रभाग

तम्बाकू में पोषक तत्व प्रबन्धन

रोपाई के बाद प्रति एकड़ यूरिया के साथ मिलाकर –

1. अनमोल खाद नीम प्लस — 120 किग्रा0
2. दयाल महाशक्तिशाली — 5 किग्रा0
3. दयाल कैल्शिबोर — 4 किग्रा0
4. सुपर एक्शन अमृत-जी — 10 किग्रा0
5. सुपर एक्शन पोटाश — 8 किग्रा0
6. सुपर एक्शन मोनो ज़िंक — 300 ग्राम
7. सल्फोवेट डी.एफ — 1 किग्रा0

गेहूँ उत्पादन हेतु आवश्यक जानकारियाँ एवं किस्मों का चयन

रबी सीजन में गेहूँ की फसल एक महत्वपूर्ण फसल है। गेहूँ की फसल में किसान भाई कुछ बातों का ध्यान रखकर निश्चित ही सीमित संसाधनों में ही और अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

बीज बुवाई से पूर्व किस्मों का चयन : प्रजाति का चयन उत्पादन में एक बड़ी भूमिका निभाता है। प्रजाति का चयन करते समय बुवाई के समय को ध्यान में रखकर ही प्रजाति का चयन करें। अगेती फसल की बुवाई हेतु एच0डी0–2967, पी0बी0डब्ल्यू0–343, पी0बी0डब्ल्यू0–502, डब्ल्यू0एच0–711, डी0बी0डब्ल्यू0–17, पी0बी0डब्ल्यू0–550 आदि प्रजातियों का चयन करें। देर से बुवाई हेतु डी0बी0डब्ल्यू0–16, राज0–3765, लोक–1, पी0बी0डब्ल्यू0–226, पी0बी0डब्ल्यू0–373, हलना आदि प्रजातियों का लगाना लाभप्रद रहता है।

बीज दर : समय से बुवाई करते समय 100 किग्रा0 बीज/है0 व देर से बुवाई करते समय 120 किग्रा0 बीज/है0 की दर से प्रयोग करें व लाइन से लाइन की दूरी 20 सेमी0 रखें।

सिंचाई : सिंचाई की उपलब्धता के आधार पर निम्न अनुसार सिंचाई करें।

सिंचाई	अवस्था	बुवाई के बाद
पहली	क्राउन रूट (ताज मूल) अवस्था पर	20–21 दिन
दूसरी	कल्ले निकलते समय	40–45 दिन
तीसरी	दीर्घ सन्धि अथवा गाँठें बनते समय	60–65 दिन
चौथी	पुष्पावस्था पर	80–85 दिन
पाँचवी	दुग्धावस्था	100–105 दिन
छठी	दाना भरते समय	115–120 दिन

नोट :

1. यदि एक ही सिंचाई उपलब्ध हो तो क्राउन रूट अवस्था पर करें।
2. यदि दो सिंचाईयाँ हों तो क्राउन रूट तथा पुष्पावस्था पर करें।
3. यदि तीन सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो तो क्राउन रूट, बाली निकलने के पूर्व तथा दुग्धावस्था पर करें।

– **डा0 अवनेश कुमार सिंह** बीज प्रभाग

लहसुन की खेती – एक सफल व्यवसाय

बुवाई के 30–40 दिन पर लहसुन की निराई–गुड़ाई के पूर्व 2 से 3 किग्रा0 **अनमोल माइक्रो प्याज–लहसुन स्पेशल** + 30 किग्रा0 डी.ए.पी. + 20 किग्रा0 **डी0ओ0पी0** + 8 किग्रा0 **सुपर एक्शन पोटाश** + 10 किग्रा0 **सुपर एक्शन अमृत–जी** + 120 किग्रा0 **अनमोल खाद** + 1 किग्रा0 **अनमोल डर्मा** का प्रयोग करें।

चना, मटर व मसूर में उकठा (Wilting) से बचाव

बीज शोधन : चना, मटर व मसूर के 1.0 किग्रा0 बीज को 2 मिली0 **वसुधा N** (राइजोबियम) + 10 ग्राम **अनमोल डर्मा** (ट्राइकोडर्मा) + 10 ग्राम **अनमोल सूडो** से शोधित (टीकाकरण) करने से उकठा, जड़ व तना गलन जैसी फफूँदजनित बीमारी से बचा जा सकता है।

भूमि शोधन : प्रति एकड़ क्षेत्रफल में **अनमोल खाद नीम प्लस** 120 किग्रा0 + **वसुधा NPK** 3 किग्रा0 + **अनमोल डर्मा** (ट्राइकोडर्मा) 1 किग्रा0 को मिलाकर कम से कम 8 घण्टे छायेदार स्थान पर रखने के बाद अन्तिम जुताई के पूर्व भूमि में इस्तेमाल करें। बुवाई करते समय **सिंगल सुपर फास्फेट** 50 किग्रा0 + **सुपर एक्शन पोटाश** 8 किग्रा0 को प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें व बाद में 3 किग्रा0 **अनमोल माइक्रो दलहन–तिलहन स्पेशल** + 8 किग्रा0 **दयाल सल्फोरिच–90 G** को बालू की पर्याप्त मात्रा में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें।

खरपतवार नियन्त्रण : बुवाई के तुरन्त बाद लेकिन 3 दिन के अन्दर **बैसालिन** 1 ली0 का स्प्रे प्रति एकड़ की दर से करें।

पर्णीय छिड़काव : 250 मिली0 **सुपर एक्शन अमृत** + 500 मिली0 **अनमोल माइक्रो तरल** + 1 किग्रा0 **अनमोल सूडो** + 250 ग्राम गुड़ को + 150 ली0 पानी में घोलकर बुवाई के 15 से 35 दिनों के अन्तराल पर 2 बार स्प्रे करें।

कीट नियन्त्रण : फली व तना छेदक से बचाव के लिए जैविक उत्पाद **ब्यूवेरिया बैसियाना** 1 किग्रा0 को 250 ग्राम गुड़ + 150 ली0 पानी में घोलकर स्प्रे करें या अधिक प्रकोप होने पर **इमिडाक्लोरोपिड** का प्रयोग संस्तुत मात्रा के अनुसार करें।

— **संजीत कुमार श्रीवास्तव,** आई.पी.एन.एम. डिवीजन
Mob.: 9792201571

मक्के की खेती में मकई राजा™ का लाभ

- मोटे, वजनदार व सुडौल मक्के के दाने।
- भुट्टे में भरपूर दानों की संख्या।
- समान रूप से पकने में सहायक।
- व्हाइट बड (सफेद कली) रोग रोकने में सहायक।
- यूरिया की बचत।
- ज्वार व बाजरा की भी भरपूर उपज में सहायक।

प्रयोग मात्रा व विधि : 3–5 किग्रा0 प्रति एकड़ बुवाई के समय या प्रथम टॉप ड्रेसिंग में यूरिया के साथ मिलाकर प्रयोग करें।

पर्णीय छिड़काव : खड़ी फसल में 1/2 किलो **दयाल मकई राजा** 200 ली0 पानी में घोलकर 15 दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव करें। छिड़काव करते समय घोल में 500 ग्राम बिना बुझा चूना अथवा 1 से 2 किग्रा0 यूरिया मिलाकर महीन कपड़े से छानकर प्रयोग करें।

दयाल मुर्गी दाना (मुर्गी पालन – एक सफल व्यवसाय)

कुछ जरूरी बातें

सफल ब्रायलर उत्पादन के मूल सिद्धांत

- एक समय में एक ही उम्र के चूजे फार्म पर रखे जायें परन्तु बड़े फार्मों में यह सम्भव नहीं है। अतः एक शेड में हर हाल में एक ही उम्र के चूजे रखे जायें।
- हैचरी ऐसी हो जिसकी साख भी ठीक हो और ब्रीड भी अच्छी होने के साथ बीमारियों से मुक्त हों। अतः एक समय में पूरे फार्म पर एक ही नस्ल और एक ही हैचरी के चूजे हों।
- जब भी नये चूजे आयें, पूरी सफाई के बाद आयें।

ब्रायलर के वजन पर मौसम का असर

मौसम का ब्रायलर पर काफी असर पड़ता है। मुख्यतः अपने यहां गर्मी–बरसात–जाड़ा तीन मौसम होते हैं। परन्तु सच तो यह है कि 365 मौसम है यही नहीं सुबह दोपहर शाम और रात सब अलग–अलग हमें अपने रख रखाव में इसके अनुरूप परिवर्तन करना आवश्यक है।

स्वच्छ वायु का आवागमन होता रहे, इसके लिये उम्र के हिसाब से पर्दे के ऊपर से हवा आने–जाने का रास्ता अवश्य छोड़ा जाये। यह उम्र के हिसाब से तापमान को बनाये रखते हुए स्वयं निर्णय लेना है।

बिछावन में बुरादे की गहराई थोड़ा–थोड़ा नया बुरादा (बिछावन) मिलाते हुए 3–4 सप्ताह तक 3"–4" तक कर देना चाहिये। इससे बिछावन में निरन्तर गर्मी बनती रहेगी। जाड़े में पीने का पानी कमरे के तापमान से कम न हो।

आमतौर से देखा गया है कि जाड़े में 3–4 हफ्ते पर बुखारी या ब्रूडर निकाल दिया जाता है। इसका निर्णय उम्र के हिसाब से तापमान की आवश्यकता को देख कर करना चाहिये। 4 हफ्ते के चूजों को 75°F ब्रूडर के नीचे तापमान चाहिये और कमरे का तापमान 65°F होना चाहिये। यदि इससे कम ताप होता है तो आप ब्रूडर या बुखारी नहीं निकाल सकते हैं।

ऐसा करने पर मृत्यु दर बढ़ेगी। किसी बीमारी का प्रकोप भी हो सकता है। फीड की फालतू खपत तय बात है।

- तापमान को बनाये रखते हुये आवश्यक स्वच्छ वायु अवश्य प्रदान करें।
- जब चूजे छोटे हों तो आद्रता 60 प्रतिशत (Relative Humidity) से अधिक बेहतर होगी, धीरे–धीरे उसे घटाते हुये 60 प्रतिशत या इससे भी कम कर देना चाहिये।
- ब्रूडर एवं कमरे का तापमान धीरे–धीरे घटाते रहना चाहिये। जो इस प्रकार होगा।

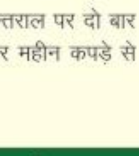

चूज़ों की उम्र के हिसाब से तापमान का विवरण

सप्ताह	ब्रूडर तापमान	कमरे का तापमान
1	90–95°F	80–85°F
2	85–90°F	75–80°F
3	80–85°F	70–75°F
4	75–80°F	65–70°F
5	70–75°F	60–65°F
6	65–70°F	60°F

— **विकास चन्द्र,** पोल्ट्री फीड डिवीजन

नवम्बर से जनवरी माह की कृषि क्रियायें

एग्री–बिजनेस

पशु–आहार

आलू (अगेती व पछेती झुलसा से बचाव)

1. नवम्बर–जनवरी माह में आलू की फसल में पहली बार मिट्टी चढ़ाते समय या 20–25 दिन की अवस्था पर 25 किग्रा0 यूरिया + 5–10 किग्रा0 **अनमोल/सुपर एक्शन अमृत–जी** + 500 ग्राम **अनमोल माइक्रो सुपर एक्शन** को मिलाकर प्रयोग करें।

द्वितीय टॉप ड्रेसिंग में 25 किग्रा0 यूरिया + 300 ग्राम **सुपर एक्शन मोनो जिंक** + 500 ग्राम **ह्यूमिक फर्ट** को मिलाकर प्रयोग करें।

2. फफूँदजनित बीमारियों (अगेती व पछेती झुलसा) से बचाव हेतु 1 किग्रा0 **अनमोल सूडो** अथवा 250 मिली0 **सूडो केयर** को 250 मिली0 **सुपर एक्शन अमृत** द्रव व 250 ग्राम गुड़ के साथ 200 लीटर पानी में घोलकर क्रमशः बुवाई के 35 व 55 दिन पश्चात् छिड़काव करें।

3. **अनमोल NPK (19:19:19)** 1 किग्रा0 प्रति एकड़ की दर से 150 ली0 पानी में घोलकर स्प्रे करें।

4. आलू को फटने से बचाने व सुडौल आलू उत्पादन के लिये यूरिया के साथ 3 किग्रा0 **कैल्शिबोर** का प्रयोग अवश्य करें।

धनिया

नवम्बर–दिसम्बर माह में धनिया की खड़ी फसल पर 3–5 किग्रा0 **दयाल धनिया अमृत** का प्रति एकड़ प्रयोग प्रथम तथा द्वितीय टॉप ड्रेसिंग में करें।

दयाल धनिया अमृत के प्रयोग से लाभ : **1.** शाखाओं की अधिकतम संख्या। **2.** पत्तियों की संख्या व मोटाई अधिक होने के साथ–साथ पौधों की शीघ्र बढ़वार। **3.** फूलों की अधिक संख्या परिणामस्वरूप भरपूर चमकदार एवं गुणवत्तायुक्त दानों की उपज। **4.** सूखे, पाले तथा बीमारी, कीट, पतंगों के प्रति सहनशीलता में वृद्धि।

गन्ना

शरदकालीन गन्ने में **प्रथम टॉप ड्रेसिग** (बुवाई के 45 दिन बाद) पर 35 किग्रा0 यूरिया + 2.5 किग्रा0 **दयाल मोनो ज़िंक** + 8 किग्रा0 **सल्फोरिच–90 G** एवं 10 किग्रा0 **अनमोल/सुपर एक्शन अमृत–जी**

द्वितीय टॉप ड्रेसिंग में (बुवाई के 60–75 दिन पश्चात्) 30 किग्रा0 यूरिया + 300 ग्राम **सुपर एक्शन मोनो ज़िंक** + 1 किग्रा0 **सल्फोवेट DF**

तृतीय टॉप ड्रेसिंग (बुवाई के 90–110 दिन पश्चात्) 30 किग्रा0 यूरिया + 500 ग्राम **अनमोल माइक्रो सुपर एक्शन** का प्रयोग करें।

☞ तना छेदक, गुरदासपुर बेधक एवं चोटी बेधक आदि से सुरक्षा हेतु 1 किग्रा0 **अनमोल बास** तथा पाइरिल्ला, सफेद मक्खी एवं काला चिटा कीट से सुरक्षा हेतु 1 किग्रा0 **अनमोल वर्ट** को 250 ग्राम गुड़ के साथ 200–250 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। दीमक व सफेद गिंडार से सुरक्षा के लिए 2 किग्रा0 **अनमोल बास** + 1 किग्रा0 **अनमोल बायोटर** को भूमि में प्रयोग करें।

सरसों

प्रथम सिंचाई के समय 30 किग्रा0 यूरिया में 2.5 किग्रा0 **मोनो ज़िंक** + 3–5 किग्रा0 **दयाल सल्फोवेट DF-WDG** को मिलाकर प्रयोग करें। माहूँ, झुलसा एवं सफेद गेरुई रोग से सुरक्षा के लिए फलियों में दाना बनते समय 1 किग्रा0 **अनमोल सूडो** अथवा 250 मिली0 **सूडो केयर** व 250 मिली0 **पेस्टीक्योर** को 250 ग्राम गुड़ के साथ 200 लीटर पानी में घोलकर शाम के समय छिड़काव करें।

सब्जियाँ – गोभी, टमाटर, मिर्च व बैंगन इत्यादि

सब्जियों में 3 मिली0 **अनमोल बून** या 2.5 मिली0 **सुपर एक्शन अमृत** तथा 2 ग्राम **वेजमोर** की मात्रा को प्रति ली0 पानी में घोलकर स्प्रे करने से बहुत बेहतरीन परिणाम पाये गये हैं, अतः किसी भी सब्जी की फसल में किसी भी अवस्था में स्प्रे करना अति लाभकारी होगा।

नोट : (1) ज़िंक वाली खाद के साथ फास्फेटिक खाद का प्रयोग न करें। (2) उपर्युक्त संस्तुतियाँ सामान्यतः एक एकड़ क्षेत्रफल हेतु हैं।

सम्पादक डा0 जितेन्द्र कुमार सिंह – दयाल फर्टिलाइज़र्स ग्रुप, परतापुर, मेरठ, फोन : 0121–2440130–132 हेतु नन्दन एडवरटाइज़िंग कं0, मेरठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित